2013-14

ISSN 2320 - 4494
RNI No. MAHAUL03008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal

VOLUME : I ISSUE VI Jan.- Mar. 2014

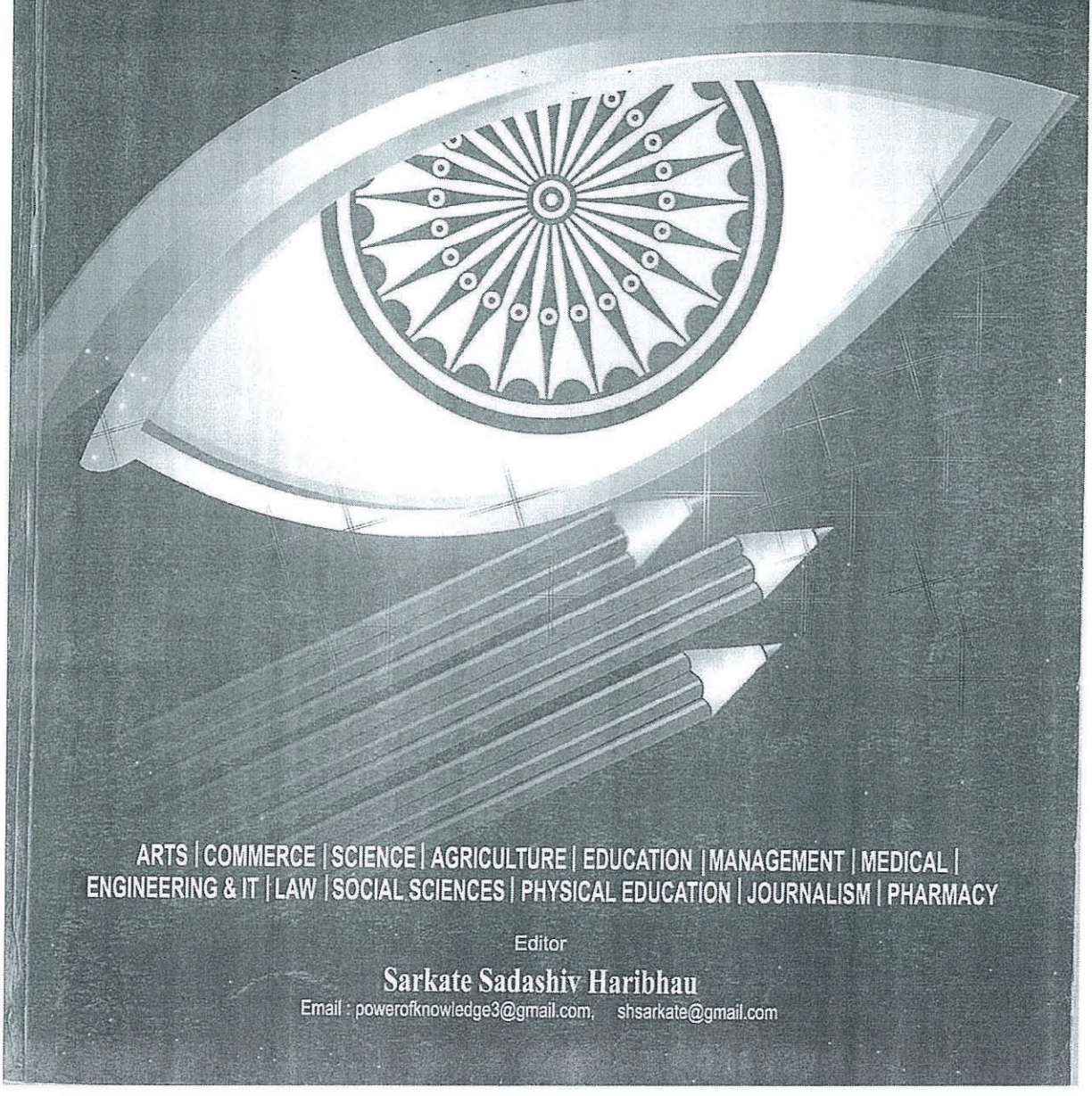

ARTS | COMMERCE | SCIENCE | AGRICULTURE | EDUCATION | MANAGEMENT | MEDICAL | ENGINEERING & IT | LAW | SOCIAL SCIENCES | PHYSICAL EDUCATION | JOURNALISM | PHARMACY

Editor

Sarkate Sadashiv Haribhau

Email : powerofknowledge3@gmail.com, shsarkate@gmail.com

१८	तौलनिकसाहित्याभ्यासाचे स्वरुप व वैशिष्ट्ये	प्रा.देठे मिरा महादेवराव	८२
१९	साहित्य कृतींच्या माध्यमांतराचे स्वरुप	प्रा.डॉ.शकील अब्दुल शेख	८८
२०	अजय कांडर यांच्या कवितेतील स्त्री चित्रण	डॉ.उदय जाधव	९१
२१	मराठी भाषेपुढील आव्हाने	प्रा. विकास शंकर पाटील	९७
२२	वै.काकांचे साधनेचे सप्त 'सोपान'	प्रा.डॉ.दत्तात्रय प्रभाकर डुंबरे	१०२
२३	वाचन संस्कृति आणि जागतिकीकरण	प्रा.पवार लता	१११
२४	अर्वाचीन वाङ्मय इतिहासाचे अध्यापन : एक दिशा	प्रा. डॉ. सोपान सुरवसे	११५
२५	साठोत्तरी हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के नाटको का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ.सौ.मेहेर एस.आर.	१२६
२६	हिंदी भाषा में फुले-आंबेडकरवादी साहित्य का स्वरूप : संक्षिप्त परिचय	प्रा. विनोदकुमार विलासराव वायचळ	१३१
२७	नारी : व्युत्पत्तीमूलक अर्थ में	प्रा.डॉ. कदम एस.एस.	१३५
२८	बाल श्रम कि समस्या और प्रभावी उपाय	प्रा.डॉ.डी. एस. नामूर्ते	१३९
२९	नारी : व्युत्पत्तीमूलक अर्थ में	प्रा.डॉ. कदम एस.एस.	१४२
३०	आपका बंटी उपन्यास में बालमनो वैज्ञानिक विश्लेषन	प्रा.डॉ.उत्तम जाधव	१४६
३१	श्री लाला शुक्लजी का महाकाव्यात्म उपन्यास - रागदरबारी	निकाळजे भुपेंद्र सर्जेराव	१४९
३२	व्यावसायिकता एवं हिंदी सिनेमा (धीरेन्द्र अस्थाना के देश निकाला उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	डॉ. मीना खरात	१५१
३३	विष्णु प्रभाकर के नाटक : एक वर्तमान संदर्भ	डॉ.मिर्जा असद बेग	१५५
३४	मस्तमौला फकिर : नामदेव ढसाल	डॉ. सुकुमार भंडारे	१५९
३५	राष्ट्रभाषा हिंदी : कितनी सही ? कितनी प्रेरक?	प्रा.विटोरे कन्नुलाल आसाराम	१६३
३६	Optimism- Key to Success	Dr.Archana Bobade	१६७
३७	The God of Small Things : A Study of Women Exploitation	Prof. Kadam Sachin S.	१६९

विष्णु प्रभाकर के नाटक : एक वर्तमान संदर्भ

डॉ.मिर्जा असद बेग

मिल्लीया महाविद्यालय, बीड (महाराष्ट्र)

विष्णु प्रभाकर के अधिकांश नाटक सामाजिक विषयोंपर आधारित है | पूँजीवादी जीवन की जर्जरता, शोषण, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, मोहभंग, स्वदेश-प्रेम, राष्ट्रीयता, नारी विद्रोह आदी विषयोंपर उनका विशेष ध्यान रहा है | लेखक गांधीवादी होने के कारण उन्होंने गांधीजी के सामाजिक आदर्शों को अपनाकर सत्य और अहिंसा के रास्ते से चलने की प्रेरणा दी है | उन्होंने अपने नाटकों में भारतीय जीवन मूल्यों के महत्त्व को उजागर किया है | साथही समाज के उच्चावर्ग की सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का चित्रण भी किया है | पुरानी पीढ़ी के संघर्ष को प्रस्तुतकर समाज जीवन को दिशा-निर्देश देना उनके नाटकों का लक्ष्य रहा है |

वर्तमान समस्याओं को चित्रित करनेवाले उनके नाटकों में 'युगे-युगे क्रान्ति', 'अब और नहीं', 'स्वेतकमल', 'डॉक्टर', 'बन्दिनी' , 'टगर' आदि हैं |

'युगे-युगे क्रान्ति' नाटक में हमें धर्मसंबंधी मूल्यों में आ रहे परिवर्तन का आभास मिलता है | आज का युवा वर्ग अन्तर्जातीय विवाह को गलत न हीं समझता और न यह मानता है कि अन्तर्जातीय विवाह करनेपर पति-पत्नी में किसी का धर्म बदलना चाहिए | नाटक की सुरेखा कहती है, "मनुष्य-मनुष्य है | धर्म, मत, जाति बदल जाने से वह नहीं बदल जाता | कुल, जाति और समाज के कारण शुद्धि का ढोंग करना मनुष्य का सबसे बड़ा अपमान है |"[२] भारतीय समाज में पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण विवाह में इतनी उच्छखलता आ गई हैं कि लड़कियाँ अपनी पसंद के वर के साथ स्वेच्छा से शादी की बात पक्की कर लेती हैं और माँ-बाप को इसका पता शादी के बाद चलता है | प्रदीप की अन्तरात्मा कहती है, "जो क्रान्ति उन्होंने की वही सचमुच क्रान्ति थी | शेष सब इच्छखलता है, पाप है, लेकिन सुनो तुम्हारे पुरखों ने जो क्रान्ति की थी, तुमने जो क्रान्तिकी थी और तुम्हारे बच्चे आज जिस क्रान्ति का स्तर उठा रहे हैं| वह एक निरंतर गतिमान प्रवाह हैं | उसमें उठती हुई लहरें टकराहट का भ्रम पैदा कर देती है |[३]" युग-युग में होनेवाली यह क्रान्ति सहज है, स्वाभाविक शाश्वत है | यह सामाजिक परिवर्तन का एक अभिन्न अंग है | ज्यों-ज्यों संचार के माध्यमों में सूचना प्राद्यौगिकी नई-नई क्रान्ति उपस्थित करती है, त्यों-त्यों हर समाज के विवाह संबंधी मूल्यों में भी परिवर्तन आ जायेगा | संकेत यह भी है कि यह बदलाव हमारे भारतीय समाज में भी आ जाय तो हो सकता है कि सदियों पुराना हमारा एक पतित्व और एक पत्नीत्व का पवित्र संकल्प ही ध्वस हो जायेगा और परिवार की नीव हिल जायेगी|

'टुटते परिवेश' नाटक में यही दिखायी देता है कि मध्यवर्गीय परिवार में होनेवाला स्नेह का झरना दिन-ब-दिन सूख रहा है | भारतीय संस्कृतिकी नींव ही यहां के पारिवारिक स्नेह-संबंधों को प्रकट करती थी | लेकिन स्वातंत्र्योत्तर युग में प्रेम का यह बंधन टुटता नजर आता है | इस टुट्न की खोज इस नाटक में की गयी है | बढ़ती हुई बेरोजगारी, पश्चिम का उपभोगवाद, मूल्य-ऱ्हास, स्वार्थपरक वृत्ति विलासमय जीवन के प्रति मोह, बुजूर्गों के प्रति अनादर, मोहभंग, धनोपार्जन की अमिट लालसा आदी और इन सब के बावजूद परिवार का वातावरण ऐसा घुटन पैदा करता है कि विश्वजीत को अपना जीवन ही उद्देश्यहीन, निरर्थक और दु:सह प्रतीत होता है |

पूत्र विवेक को नौकरी न होने से विद्रोह और विध्वंस की बात करनेपर विश्वजीत उसका खंडन करता है | "क्रान्ति का अर्थ ध्वंस करना नहीं है निर्माण करना और उसके मूल में है कर्तव्य | देश और समाज के प्रति

तुम्हारे कुछ कर्तव्य हैं | उनको भूलकर तुम क्रान्ति का स्वप्न ले सकते हो, क्रान्ति नहीं कर सकते |"[३] 'टुटते परिवेश' नाटक में अन्तरधर्मीय विवाह का समर्थन दिप्ति की इन बातों से मिलता है | "देश का नेता कहते नहीं थकते कि आनेवाली संतति के भेद की ये दीवारें तोड़ डालनी चाहिए| उस समय उत्तेजना से उनकी नसें भड़कने लगती हैं| लेकिन जब हम उन दीवारों को तोड़ते हैं तो यही नेता पिता बनकर हमें रोकते है|"[४] अर्थात दिप्ति के माध्यम से देश की अखंडतापर लगनेवाली चोटोंपर गहरी चिंता व्यक्त की गई है | साथही वर्तमान भारतीय समाज में व्याप्त घोर भ्रष्टाचार के विरूद्ध युवा पीढ़ी का सशक्त आक्रोश भी व्यक्त हुआ है |

'अब और नहीं'नाटक का पूरा परिवार उच्चशिक्षित है | देश-विदेश में है | भौतिक सुविधाओं से ओत-प्रोत है | फिर भी शान्ता का मन यह सोचकर विद्वेलित हो उठता है कि विवाह के साथ उसकी सारी व्यक्तिपरक इच्छाओं, आकांक्षाओं और रूचियोंपर पर्दा पड़ गया था | अब जीवन की सन्ध्या बेला में सभी परिवारिक झंझटों से मुक्ति पाकर नए मकान का गृह प्रवेश करने और तत्पश्चात देश-विदेशमें भ्रमण करने की योजना पति विरेंद्र बनाता है, लेकिन पत्नी शांता इस में अपना मंगल नही देखती | इस प्रकार शान्ता सुख-सुविधाओं के बीच रहते हुए भी अस्वतंत्रता का अनुभव करती है और अपने को पुरूष की दासी महसूस करती है की, पुरूष उनके मन की भूख को समझने की चेष्टा नहीं करते| शान्त कहती है - "मैंने वही चाहा जो वह (पति) चाहते थे | मैंने वही किया जो उनकी इच्छा थी | वही कहा जो कहलवाना चाहते थे | वही विश्वास किया जो उनका विश्वास था |.... मैं घर की राणी न हीं थी दासी थी |..... मैं भूल गयी थी कि मेरी भी कोई स्वतंत्र सत्ता है |... मुझे अब पता लगा कि मैं कौन हूँ और क्या चाहती हूँ |.... मन की इस भूख को मैने तन की भूख की भेंट कर दिया | लेकिन अब ऐसा नहीं कर पाउँगी, नहीं करूँगी |.... मैं मुक्ति चाहती हूँ |.... मेरे चारों और हवा बंद है | मैं मुक्त हवा चाहती हूँ |"[५] इस तरह सन्हृदय से नारी मुक्ति का नारा लगाती हुई शान्त नई पीढ़ी की बेटी शुभ्रा से कहती है | "तुझे उनसे लड़ना होगा| खिड़कियों को जबरदस्ती खोल देना होगा, चाहे उँगलियाँ ही क्यों न घायल हो जाएँ | अपने बच्चों को अन्याय का विरोध करना सिखाना होगा मुझे तो देर हो गई, फिर भी मैं अपना पथ खोज लूँगी, अवश्य खोज लूँगी|"[६] आज भी नारी पूजनीय कही जाती है | लेकिन सर्वत्र उसका अपमान, शोषण, दमन तथा उत्पीड़न हो रहा है | इस प्रकार आत्मा की मुक्ति की तलाश के इस नाटक में नारी शोषण की विविध समस्याएँ आज भी दिखायी देती हैं |

'स्वेतकमल' नाटक में प्रभाकरजीने बिंदू के चरित्र के माध्यम से यही दर्शाया है कि आर्थिक दबाव में परिवार के पोषण का दायित्व निभाने के लिए जो शिक्षित मध्यवर्गीय युवतियाँ काम की खोज में भड़कती है, लेकिन उन्हें पदासीन मगर मच्छों के चंगुल से अपने को बचाये रखने के लिए बहुत ही प्रताड़ना और यातना सहनी पड़ती है | साथ ही आर्थिक कठिनाईयों के कारण सांस्कृतिक मूल्यों समझौता करना पड़ता है |

इसमें जो समझौता नहीं करती वह दुर्वह बन जाती है | ऐसी नारियों का प्रतिनिधित्व बिन्दू इस घूटन को प्रकट करती हुई कहती है | 'नहीं मैं समझोता नही करूँगी .... नहीं कर सकती .... शरीर को दाँवपर लगाने के साथ-साथ अपनी चेतना का गला घोंटना पड़ता है और चेतना के अभाव में जीवन का कोई अर्थ होता है क्या | नहीं, मैं अपने मन, शरीर और चेतना को खण्ड-खण्ड करके किसी के लिए खुशी नहीं खरीदुँगी, नहीं ही खरीदुँगी|"[७] बिन्दू परिवार के सदस्यों के लिए आत्मसंघर्ष करती है | महानगरीय फैशनपरस्ती, विलासिता, यौन-उच्छखलता, सैक्स, रेकेट, मद्य इन सब के परिणाम स्वरूप बढ़ रही अपराधी वृत्तियाँ, आत्महत्याएँ, घुटन, संन्यास आदि का मार्मिक चित्रण इस नाटक में है | आज की

सभ्यता मनुष्य को किस प्रकार सांस्कृतिक चक्रव्यूह में फँसी रही है | जीवनमूल्यों मे कूछ बदलाव भी आए हैं | जो समाज को रसातल की और ले जा रहे हैं | लेकिन नाटक की बिन्दू समाज की इस स्थितीपर सोचती हुई कहती है | "यहाँ हर नर भक्षक है, हर नारी भक्ष्य | भोजन से पुर्व उसे सुपाच्च बनाने के लिए उसे यातना देनी ही होगी, जैसे बिल्ली चूहे को देती है | लेकिन मैं उनके जाल में नहीं फसूँगी |"[८]

"डॉक्टर" नाटक में डॉ. अनिला के अन्तर्द्वंद्वारा वह संघर्ष दिखाया है, जो पतिद्वारा अपमानित और परित्यक्त होनेपर पुरूषवर्ग के विरूद्ध उमड़ पड़ता है | ऑपरेशन थियेटर में अपने पूर्व पति सतीशचंद्र शर्मा की पत्नी का ऑपरेशन करते समय उसके मन में पूर्व पति से बदला लेने की इच्छा जागृत होती है | वही मन ही मन कहती है | "यू सूनहरा अवसर है |... नारी के अपमान का बदला लो |... मैं मधुलक्ष्मी हूँ | मुझे भुलों मत |... मैं पुरूष को तड़पते देखना चाहती हूँ | बह जाने दो रक्त निकल जाने दो प्राण... नस... नाड़ियों को बंद मत करो... फोरसेप्स अंदर छोड़ दे सीमत....|"[९] लेकिन डॉ.अनिला की मानवीयता बदला लेने से उसे रोकती है और सफल ऑपरेशन करती है | डॉ.अनिला जानती है कि पूर्व पति सतीशचंद्र शर्मा ने असे अपमानित और परित्यक्त किया है | उसके आत्मसम्मान को क्षति पहूँचाकर दूसरा विवाह किया है, किन्तु फिर भी डॉ.अनिला अपने प्रतिशोध की भावना को दूर रखकर अपना कर्तव्य पूर्ण करती हुई सफल ऑपरेशन करती है | डॉ.अनिला का भाई उसे समझाता हैं, "बीमार न दुश्मन होता है न दोस्त | तुम डॉक्टर हो, और एक डॉक्टर को अपने नर्सिंग होम की मान-मर्यादा से बढ़कर और किसी चीज से प्यार नहीं होता |"[१०] अर्थात 'डॉक्टर' यह नाटक प्रतिशोध की भावनापर डॉक्टर के कर्तव्यबोध का उदात्त मानवीय मूल्य विजय पा लेता है |

'बन्दिनी' नाटक के माध्यम से यही दिखाया है कि, आज के वैज्ञानिक और प्राद्योगिकी युग में भी भारतीय समाज किस प्रकार धार्मिक सदियों और अंध-विश्वासों के जाल में फँसा हुआ है | शिक्षित-अर्धशिक्षित तथा हर पीढ़ी के लोग आधुनिकता के भीतर आज भी धार्मिक अंधविश्वासों से मोहित हैं | कई देवी-माताएँ चमत्कार दिखाती हुई अंध:विश्वास की आत्मप्रवंचना में स्वयं बन्दिनी बनकर दुसरों को भी भ्रम में डाती हैं |

नाटक के जमीनदार कालीनाथराय बहु उमाको सष्टांग प्रणाम करते हैं और कहते हैं कि सपने में माँ जगदंबा स्वयं छोटी बहु उमा के रुप में उनके घर में अवतरित हुई है | सारा गांव दर्शन के लिए खड़ा है, लेकिन उमा का पति सुरेंद्र इस अंध: विश्वास को दूर करना चाहता है | सुरेंद्र मानता है की, गांववाले अज्ञानी है, अज्ञानपर अंधविश्वास पलता है और इसी ने उमा के विवेक को नष्ट कर दिया है और वह पाषाणी हुई है | उमा को महाकाली माननेपर सुरेंद्र कहता है | "तुम्हारी संपूर्ण चेतना को अंधविश्वास ने ग्रस लिया है |" तुम उमा नहीं हो | तुम देवी नहीं है | तुम बन्दिनी हो | काश ! मैं तुम्हें अंधविश्वास की इस क्रूर कारा से मुक्त कर पाता |"[११] धार्मिक अंधविश्वास भारतीय समाज को किस तरह गुमराह कर रहा है | इस भ्रम से लोगों को दूर करने के लिए सुरेंद्र कहता है | "यह देवी नहीं है | यह बंदिनी है | अंध-विश्वासों की दीवारों से घिरी-घिरी एक बंदिनी है | इसे महत्त्वाकांक्षा और आत्मवंचना ने अंधा कर दिया है |"[१२]

'टगर' नाटक में नारी-पुरूष की बदलती स्थितीयों को प्रस्तुतकर लेखक कहना चाहते है कि आधुनिक नारी विवाह को एक बंधन समझने लगी है | उसे लगता है की विवाह के जरिए पुरूष उसे दासी बनाता है | नारी युगों की इस दास्ता से अपने को मुक्त करने के लिए छटपटा रही है | ज्यों-ज्यों वह इन गुत्थियों को सुलझाने की चेष्टा करती है, त्यों-त्यों वहन नए बंधनों में उलझाती जाती है | प्रतिहिंसा की भावना उसमें इतनी तीव्र है कि विवाह के बहाने नए-नए पुरूषों को अपने जाल में फँसाती है, जिससे न पुरूष

को शान्ति मिलती है न नारी को | रश्मिप्रभा का विवाह- शेखर से होता है, लेकिन शेखर के जीवन में और एक स्त्री आने से दोनों अलग होते हैं | रश्मिप्रभा अपना नाम टगर रखकर अन्य पुरूषों से बदला लेगा चाहती है | अब वह विवाह करने से पहले शुद्ध होना चाहती है | वह कहती है - "मैंने इसलिए ठाकुर साहब को अपने जाल में फँसाया था | मेरा विचार जासूसी करना नहीं था, पर करनी पड़ी | मुझे खुशी हुई क्योंकि आसानी से पुरूष से बदला लेने का अवसर मिल गया | मैं माथुरसाहब की और भी इसलिए खिंची | मेरे लिए वह माथुर नहीं था, केवल पुरूष था | शेखर का ही एक रुप....|"[१३] इस प्रकार पारिवारिक टुटनपर प्रकाश डालकर नाटककार यही दर्शाना चाहते हैं कि जो जीवनमूल्य विवाह की संस्था में आ गये हैं | वे समाज की प्रगति मे साधक नहीं ; बल्कि बाधक हैं |

निष्कर्षत: कहा जा सकता हैं कि विष्णू प्रभाकरजी जागरूक और प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं | उन्होंने समाज में उत्पन्न समस्याओं को देखा, परखा और समझा तथा अपने नाटकों को संवेदना का आधार बनाया | स्वतंत्र प्राप्ति के पूर्व की तथा स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक जीवन के नारी संघर्ष का चित्रण सजगता से किया | विशेषत: नारी जीवन से संबंधित वैवाहिक संघर्ष को उन्होंने उजागर किया | लेखक ने प्रेम-विवाह, अन्तरजातीय विवाह, दहेज एवं अनमेल विवाह के साथ-साथ विधवा विवाह की समस्याओंपर भी प्रकाश डाला है |

पुरूष और नारी एक-दूसरे के पुरक हैं | विवाह धार्मिक संस्थाओं से जुड़ी सामाजिक संस्था माना गया है | विवाह सामाजिक, धार्मिक तथा नैतिक विकास के लिए अत्यंत पवित्र बंधन है | आधुनिक भारतीय समाजपर पश्चिम सभ्यता ने अधिपत्य किया है | पुरूष तो एक से अधिक विवाह कर सकता है, किन्तु यह अधिकार नारी को नहीं है | पुरूष की पहली पत्नी जीवित हो तो भी वह दुसरी स्त्री को अपने घर रख लेता है | लेकिन भर जवानी में विधवा हुई नारी विवाह नहीं कर सकती | बालविवाह का प्रचलन होने के कारण नादान उम्र में ही पति की मृत्यु हो जानेपर हमारा समाज दूसरा विवाह करने की अनुमति नहीं देत हैं |

अत: विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी जीवनपर्यंत धार्मिक विषमताओं से उत्पन्न संघर्ष में जुझती दिखायी देती है |

संदर्भग्रंथ :-

१) विष्णू प्रभाकर - विष्णू प्रभाकर के संपूर्ण नाटक- भाग - ५, पृ.२४

२) वही पृ.१८०

३) वही भाग-२, पृ.४०

४) वही भाग-२, पृ.३८

५) विष्णू प्रभाकर- अब और नहीं-पृ.६०

६) विष्णू प्रभाकर, विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक, भाग-४, पृ.२८७

७) वही, भाग-६, पृ.२८

८) विष्णु प्रभाकर, स्वेतकमल, पृ.५१

९) विष्णु प्रभाकर, विष्णु प्रभाकर के संपुर्ण नाटक-भाग-४, पृ.१६७

१०) वही भाग-४, पृ.१९९

११) डॉ.विवेकानंद पिल्लै-विष्णु प्रभाकर के नाट्य साहित्य में सामाजिक चेतना, पृ.११५.

१२) विष्णु प्रभाकर-विष्णु प्रभाकर के संपूर्ण नाट्य भाग-५, पृ.२२

१३) वही भाग-६, पृ. ३८७

❑ ❑ ❑